प्रातःक्लास पिताश्री ओमशांति 29.10.67

रिकार्ड– मुखड़ा देख ले प्राणी.....ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप कहते हैं अपनी जांच करो कि याद की यात्रा से हम तमोप्रधान से सतोप्रधान तरफ कितना आगे बढ़े हैं ;क्योंकि जितना2 याद करेंगे उतना पाप कटते जावेंगे। अब यह अक्षर कहीं कोई शास्त्रों में लिखी हुई नहीं है ;क्योंकि जिस2ने धर्म स्थापन किया, उसने जो समझाया उसकी शास्त्र बनी हुई है, जो फिर बैठ पढ़ते हैं। पुस्तक की पूजा करते हैं। अब यह भी समझने की बात है जबकि यह लिख हुआ है देह सहित देह के सर्व सम्बंध को छोड़ अपन को आत्मा समझो। बाप याद दिलाते हैं तुम बच्चे पहले2 नंगे आये थे। वहां तो पवित्र ही रहते हैं। मुक्ति जीवनमुक्ति में पतित आत्मा कोई जाय नहीं सकती। वह निराकारी ,निर्विकारी दुनियां। इसको कहा जाता है साकारी विकारी दुनियां। फिर यह सतयुग में ही निर्विकारी दुनियां बनती है। सतयुग में रहने वाले देवताओं की तो बहुत महिमा होती है। तो अब बच्चों को समझाया जाता है अच्छी रीति धारण कर औरों को समझाओ। तुम आत्माएं जहां से आये हो पवित्र ही आये हो। फिर यहां आय अपवित्र जरूर बनना ही है। सतयुग को वायसलेस वर्ल्ड ,कलियुग को विषस वर्ल्ड कहा जाता है। अब तुम पतित–पावन बाप को याद करते हो कि हमको पावन वायसलेस बनाने आप विषस दुनिया विषस शरीर में आओ। बाप खुद बैठ समझाते हैं ब्रह्मा के चित्र पर ही मूंझते हैं कि दादा को क्यों बिठाया है। समझाना चाहिए यह तो भागीरथ है ना। शिव भगवानुवाच है ना। यह रथ मैंने लिया है ;क्योंकि मुझे प्रकृति का आधार जरूर चाहिए। नहीं तो मैं तुमको पतित से पावन कैसे बनाउं?रोज पढ़ाना भी जरूर है। अब तुम बच्चों को बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। सभी आत्माओं को अपने बाप को याद दिलाना है। कृष्ण को तो सभी आत्माओं का बाप नहीं कहेंगे। उनको तो अपना शरीर है। तो यह बाप बहुत सहज समझाते हैं। जब भी किसको समझाओ बोलो बाप कहते हैं तुम .....नंगे जाना है। वहां से पवित्र आत्मा आती है। भल कोई आते हैं तो भी पवित्र हैं तो उनकी महिमा जरूर होगी। सन्यासी उदासी ,गृहस्थी जिनका नाम होता है जरूर उनमें प्रवेशता होती है। इसलिए महिमा होती है। वैसे इनमें भी बाप की प्रवेशता होती है। धर्म स्थापन करने लिए भी पवित्र आत्मा की प्रवेशता होती है ;क्योंकि उनको आना ही धर्म स्थापन करने। जैसे बाबा गुरुनानक लिए कहते हैं। अब गुरू अक्षर भी कहना पड़ता है। कोई सिक्ख बैठा हो ,तुम सिर्फ नानक कहो तो वह कहेगा इनको इतनी भी सभ्यता नहीं है। वह कहेंगे गुरुनानक बोलो ;क्योंकि नानक नाम तो बहुतों की है ना। जब किसकी महिमा की जाती है तो उस मर्तबे से कहा जाता है। न कहने से भी अच्छा नहीं। कहने से भी अच्छा नहीं। वास्तव में बच्चों को समझाया जाता है गुरू कोई भी नहीं है सिवाय एक के। जिसके नाम पर ही गाते हैं सदगुरू अकाल.....वह अकालमूर्त है अर्थात् जिसको काल न खावे। वह है आत्मा। तब यह कहानियां आदि बैठ बनाई हैं। कहानियों की किताब नावेल्स आदि भी बहुत पढ़ते हैं। बाबा बच्चों को खबरदार करते हैं। कब भी कोई नावेल आदि नहीं पढ़ना है। कोई2 को आदत होती है। यहां तो तुम सौभाग्यशाली बनती हो। कोई2 निभाग्यवती होती हैं। बाबा कब2 सुनते हैं कि कोई ब्राह्मणियां ,ब्रह्माकुमारियां भी नावेल पढ़ती हैं। इसलिए बाबा सब बच्चों को कहते हैं कब भी किसको नावेल पढ़ता देखो तो झट उठाय फाड़ दो। इसमें डरना न है। ब्राह्मण वा दादी हमको कोई सराप न दे वा गुस्से न हो ,ऐसी कोई बात नहीं। तुम्हारा काम है एक/दो को सावधान करना। बेकायदे कोई चलन है तो सावधान करना है। कोई भी ब्राह्मणी की ऐसी चलन है जो ब्राह्मणीपना पर काला टीका लगाती है तो झट रिपोर्ट करनी चाहिए। नहीं तो सुधरेंगे कैसे?अपना नुकसान करते रहेंगे। खुद में योगबल न होगा तो यहां क्या बैठ सिखावेंगे?बाबा की मनाह है। अगर फिर भी ऐसा काम करेंगे तो .....जरूर खाती रहेगी। अपना ही नुकसान होगा। इसलिए कोई में भी कोई अवगुण देखते हो तो लिखना.....। ब्राह्मणी कोई बेकायदे चलन तो नहीं चलती ;क्योंकि वह भी सर्वेंट है। बाबा भी कहते हैं .....

सहित समझाते हैं। बच्चियां पढ़ाने वाली जो हैं उनके देहाभिमान न आना चाहिए। बाबा हमारी महिमा करते हैं। कुछ भी नहीं। टीचर भी स्टुडेंट का सर्वेंट है ना। गवर्नर आदि भी चिट्ठी लिखते हैं। नीचे सही करेंगे आई एक ए ओबिडियन्ट सर्वेंट। बिल्कुल सिम्पल नाम लिखेंगे। बाकी क्लर्क लिखेगा। अपने हाथ से कब बड़ाई नहीं लिखेंगे। आजकल तो आपे ही अपन को श्री श्री लिख देते हैं। यहां भी कोई ऐसे हैं श्री फलाना लिख देते हैं। वास्तव में ऐसे भी लिखना न चाहिए। न फीमेल्स श्रीमती लिख सकती हैं। श्रीमत मिली ही तब जब श्री श्री आकर श्रीमत देवे। नहीं तो सभी का है ही भ्रष्ट मत। तुम समझाय सकते हो। निशानी तो है ना। श्रीमत से देखो यह बने हैं। जरूर कोई की मत से तो बने हैं ना। भारत में यह किसको भी पता नहीं है कि यह इतना उंच विश्व का मालिक कैसे बने। तुम किसको भी समझाय सकते हो। आओ तो हम आपको इन(ल.ना.) की जीवन कहानी बतावें। यह विश्व के मालिक कैसे बने। तुमको तो बहुत नशा चढ़ना चाहिए। यह एमऑब्जेक्ट का चित्र तो हमको सदैव छाती से लगाया हुआ होना चाहिए। किसको भी बताओ हमको भगवान पढ़ाते हैं राजाओं का राजा बनाने। हम राजयोग सीखते हैं। यह हमारा रुहानी स्कूल का बैज है जिससे हम विश्व का महाराजा बनते हैं। बाप आये हैं इस राज्य की स्थापना करने। इस पुरानी दुनियां का विनाश सामने खड़ा है। तुम छोटी2 बच्चियां तो तोतली भाषा में किसको भी समझाय सकते हो। बड़े2 सम्मेलन आदि होते हैं उनमें तुमको बुलाते हैं यह चित्र तुम ले जाओ और बैठ समझाओ भारत में फिर से इन्हों का राज्य स्थापन हो रहा है। कहां भी बड़ी सभा में तुम समझाय सकते हो। सारा दिन सर्विस का ही नशा रहना चाहिए। भारत में इनका राज्य स्थापन हो रहा है। बाबा हमको राजयोग सिखाय रहे हैं। शिव भगवानुवाच हे बच्चों तुम अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो तो तुम यह बन जावेंगे। 21पीढ़ी लिए। दैवी गुण भी धारण करनी है। अभी तो सबकी आसुरी गुण है। श्रेष्ठ बनाने वाला तो एक ही है। श्री श्रीशिवबाबा। वही उंच ते उंच बाप हमको पढ़ाते हैं। शिव भगवानुवाच है मनमनाभव। भागीरथ तो मशहूर है। भागीरथ को ही ब्रह्मा कहा जाता है। जिसको महावीर भी कहते हैं। यहां (दिवाला मंदिर) में बैठे हुए हैं। जैनी आदि जो मंदिर बनाने वाले हैं वह कोई यह जानते थोड़े ही होंगे। तुम छोटी2 बच्चियां कोई से विजिट ले सकती हो। चित्र साथ हो। सारी दुनियां के कच्छ में है कुर्म। गीता आदि शास्त्र आदि ले जाये कथा सुनाते हैं। वह है झूठी शास्त्र। तुम्हारे कच्छ में होगा.....। वह है ही झूठ खंड। तुम सच्च खंड की स्थापना करते हो। अक्षर ही है ना पतित और पावन ;परंतु पत्थर बुद्धि मनुष्य कुछ समझते ही नहीं। जैसे..... जनावर अपना शरीर निर्वाह अर्थ करते हैं वैसे मनुष्य भी करते हैं। कोई2 पशु–पक्षी भी अपना घर ऐसा युक्ति से बनाते हैं जो कोई की ताकत नहीं। बहुत खूबसूरत बनाते हैं। कोई मनुष्य बनाय न सके। बहुत फर्स्ट क्लास पक्षी आदि होते हैं। अभी तुम बहुत2 श्रेष्ठ बन रहे हो। यह भारत की एमऑब्जेक्ट है ना। भारत में इन्हों का राज्य था। कितना नशा चढ़ना चाहिए। यहां बाबा अच्छी रीति नशा चढ़ाते हैं। सभी कहते हैं तो हम तो ल.ना. बनेंगे। राम–सीता बनने लिए कोई भी हाथ न उठावेंगे। चित्र भी बनाते हैं। पूछते हैं तीर कमान हिंसक निशानी है। यह रामचंद्र को देवें वा निकाल देवें। बाबा कहते हैं देना पड़े। मनुष्य नहीं समझते यह इनको क्यों देते हैं। तुम क्षत्रिय हो ना। वह है हिंसक क्षत्रिय। तुम हो अहिंसक। तुम अहिंसक क्षत्रियों को कोई भी नहीं जानते। यह तुम अभी समझते हो। गीतों में भी अक्षर है मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझो। यह तो समझने की बात है। और कोई भी समझ नहीं सकते। बाप बैठ (बच्चों) को शिक्षा देते हैं। बच्चे आत्माभिमानी बनो। यह ....तुम्हारे लिए 21जन्म चलती है। तुमको शिक्षा .....ही है 21जन्मों लिए। बाबा घड़ी2 मूल बात समझाते हैं अपन को आत्मा समझ बैठो। परमात्मा .....हम आत्माओं को समझाते हैं। तुम घड़ी2 देहाभिमान में आय भूल जाते हो। फिर घर–बार याद.....यह होता है। भक्तिमार्ग में भी भक्ति करते2 बुद्धि और तरफ चली आती है। एक टक सिर्फ

नवधा भक्ति वाले ही सिर्फ बैठते हैं, जिसको तिवर भक्ति कहा जाता है। एकदम लवलीन हो जाते हैं। तुम याद में बैठते हो कोई समय एकदम अशरीरी बन जाते हैं। जो अच्छे बच्चे होंगे वह ही इस अवस्था में बैठेंगे। देह का भान निकल जावेगा। अशरीरी हो उस मस्ती में बैठे रहेंगे। यह टेव पड़ जावेंगी। सन्यासी हैं तत्व ज्ञानी वा ब्रह्मज्ञानी। वह कहते हैं हम लीन हो जावेंगे। यह पुराना शरीर छोड़ ब्रह्म तत्व में लीन हो जावेंगे। सभी का अपना2 धर्म है ना। कोई भी दूसरे धर्म का नहीं मानते। आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले भी तमोप्रधान बन गए हैं। गीता का भगवान कब आया था, गीता का युग कब था, कोई नहीं जानते। तुम जानते हो इस संगमयुग पर ही बाप आय राजयोग सिखलाते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। भारत की ही बात है। अनेक धर्म भी थी(था) जरूर। गायन भी एक धर्म की स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश। सतयुग में था एक धर्म। कलियुग में अभी हैं अनेक धर्म। फिर एक धर्म की स्थापना होती है। एक धर्म था। अब नहीं है। बाकी सभी खड़े हैं। बड़ का झाड़ का मिसाल भी बिल्कुल ठीक है। फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। वैसे इसमें भी देवी देवता धर्म है नहीं। आदि सनातन देवी देवता धर्म जो था वह अब प्रायःलोप है। फिर से बाप स्थापन करते हैं। बाकी इतने सब धर्म तो पीछे आये हैं। फिर भी चक्र को रिपीट जरूर करना है अर्थात् पुरानी दुनियां से फिर नई दुनियां जरूर बनना है। नई दुनियां में इन्हों का राज्य था। तुम्हारे पास बड़े चित्र भी हैं। छोटे भी हैं। बड़ी चीज होगी तो कोई देख पूछेंगे यह क्या उठाया है। बोलो हमने वह चीज उठाई है जिससे मनुष्य बेगर से प्रिंस बन जाता है। दिल में बड़ी उमंग, खुशी रहनी चाहिए। हम आत्माएं भगवान के बच्चे हैं। हम आत्माओं को भगवान पढ़ाते हैं। बाबा हमको नयनों पर बिठाय ले जाते हैं। इस छी2 दुनियां में तो हमको रहने का नहीं है। त्राहि2 करेंगे आगे चलकर। बात मत पूछो। मुसलमानों की जब लड़ाई लगती है एक गांव में कुछ आपस में झगड़ा हुआ ,अखबार में पड़ा तो दूसरे गांव में भी 5/6को मार देंगे। यवनों और हिंदुओं का भी बहुत झगड़ा होता है। खून की नदियां बहनी हैं। अपने धर्म वाले एक को इतने तंग नहीं करते हैं। और से बिगरते हैं तो बात मत पूछो। करोड़ों मनुष्य मरते हैं। मरेंगे करोड़ो तो लिखेंगे लाख। पूरा थोड़े ही बताते हैं। यह तो तुम बच्चों की बुद्धि में है। हम इन आंखों से जो कुछ देखते हैं यह कुछ भी रहना न है। यहां तो मनुष्य हैं कांटों मिसल। सतयुग है फूलों का बगीचा। फिर हमारे नयन ही ठंडी हो जावेगी। बगीचे में जाने से नयन शीतल हो जाते हैं। तुम तो अभी पदम भाग्यशाली बन रहे हो। ब्राह्मण जो बनते हैं उनके कदम में पदम हैं। तुम बच्चों को समझाना चाहिए हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। इसलिए बाबा (ने) बैजेज भी बनवाई है। सफेद साड़ी पड़ी हो,बैज पड़ा हो। गाते भी हैं आत्माएं परमात्मा अलग रहे बहुकाल.....परंतु बहुकाल का अर्थ भी साधु आदि थोड़े ही जानते हैं। तुमको बाप ने बताया है। बच्चे तो बहुत हैं ;परंतु नामी–ग्रामी तो यह राधे–कृष्ण ही हैं। सतयुग के फर्स्ट प्रिंस–प्रिंसेज। कब किसकी ख्याल में भी नहीं आवेंगे कि यह कहां से आये। सतयुग के आगे जरूर कलियुग होगा। उन्होंने क्या कर्म किया जो विश्व का मालिक बने?भारतवासी कोई इन्हों को विश्व का मालिक नहीं समझते। इनका जब राज्य था तो भारत में और कोई धर्म था नहीं। अभी तुम बच्चे समझते हो बाप हमको राजयोग सिखाय रहे हैं। हम यह(ल.ना.) बन रहे हैं। हमारी एमऑब्जेक्ट ही यह है। भल मंदिरों में इन्हों के चित्र आदि हैं ;परंतु यह थोड़े ही समझते हैं कि इस समय यह स्थापन हो रही है। तुम्हारे में भी नम्बरवार समझते हैं। कोई तो बिल्कुल ही भूल जाते हैं। चलन ऐसी होती है जैसे मेहतरों की। यहां समझाते तो बहुत है,यहां से बाहर निकले, खलास। सर्विस का शौकर रहना चाहिए। सबको यह पैगाम देने युक्ति रचे। मेहनत करनी है। नशे से कहना चाहिए शिवबाबा कहते हैं मुझे (याद) करो तो पाप मिट जावेंगे। हम एक शिवबाबा के और किसको याद नहीं करते। ऐसे2 उछल से .....चाहिए। अच्छा ,मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप का यादप्यार गुडमार्निंग। बच्चों को नमस्ते।